HISTORY – III UNIT (B.A.LL.B. 5 YEAR – IIND SEMESTER)

खिलजी वंश (1290 – 1310)

खिलजी वंश या खलजी वंश मध्यकालीन भारत का एक राजवंश था इसने दिल्ली की सत्ता पर 1290–1320 ई0 तक राज किया। दिल्ली की मुस्लिम सल्तनत में दूसरा शासक परिवार था, हालॉकि खिल्ली कबीला लंबे समय से अफगानिस्तान में बसा हुआ था, लेकिन पूर्ववर्ती गुलाम वंश की तरह यह राजवंश भी मूलतः तुर्किस्तान का था।

वंशावली वृक्ष : खिलजी वंश

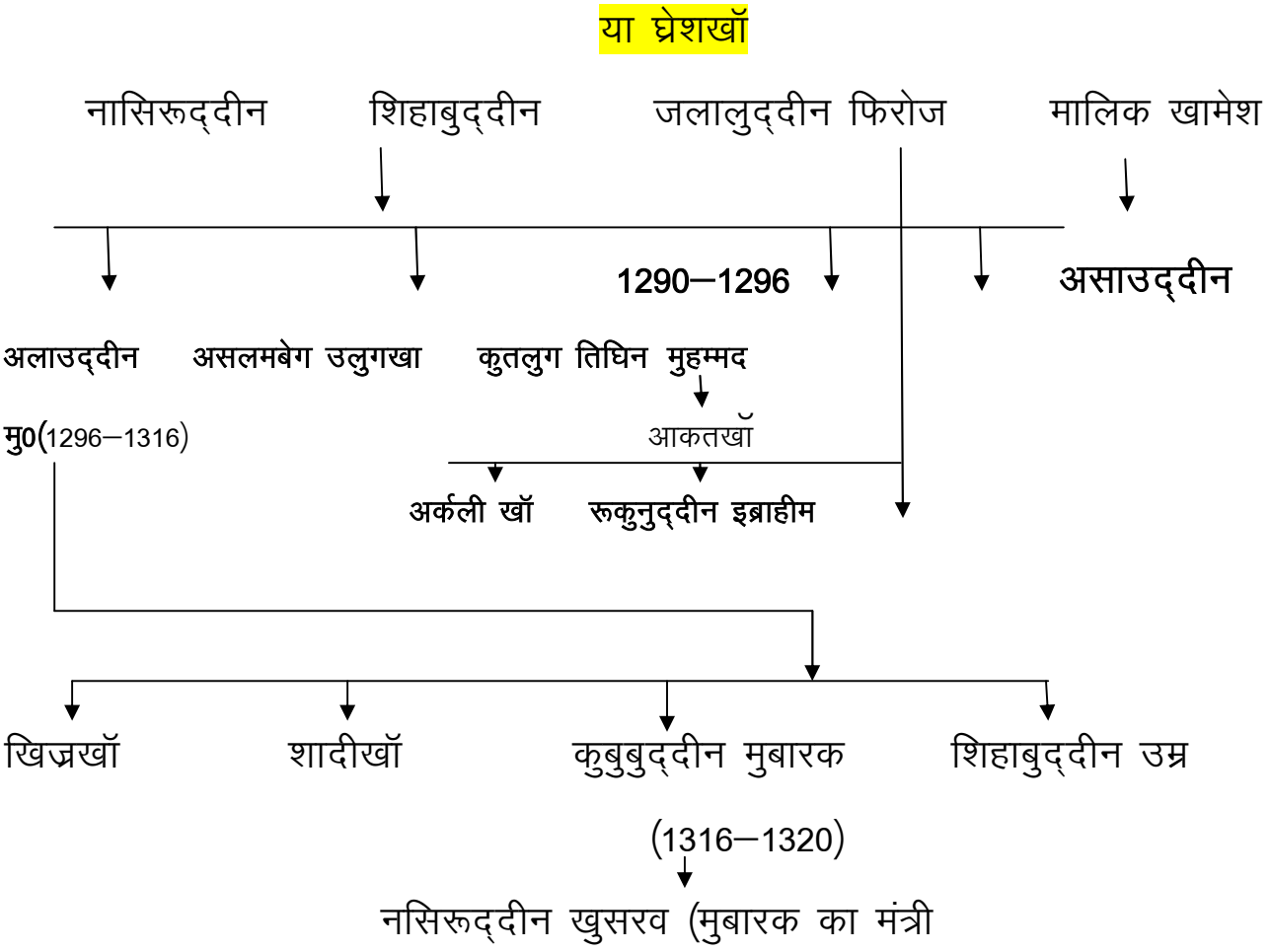

(देववल देवी जो कर्ण को पत्नी थी, उसे बाद अलाउद्दीन ने विवाह किया, उसकी मृत्यु के पश्चातृ खुसरव ने देवल देवी से विवाह किया।

अफगानिस्तान के खलजी/खिलजी निवासी

खिल्जी वंश (1290-1320 ई.)

(2) परम्पराएं अपनाने के कारण अफगान समझे गए।

खिल्जी वंश (1290-1320)

↳ संस्थापक - जलालुद्दीन फिरोज खिल्जी (कैकुबाद व क्यूमर्स की हत्या) (1290-1296)

उपाधि - शाइस्ता खाँ

पूर्व में सुल्तनत (इल्तुतमिश) काल में नौकरी करने गए थे।

राज्यारोहण - किलोखरी महल

1 वर्ष पश्चात दिल्ली गया → तुर्क सरदारों को संतुष्ट करने की नीति अपनायी

बलबन के प्रति श्रद्धा प्रकट की।

बरनी - "एक चींटी को भी नुकसान न पहुँचाने की नीति में ~~संलग्न करने की~~ विश्वास करता था।"

प्रमुख घटनाएं—

1→ मलिक छज्जू का विद्रोह → (कड़ा मानिकपुर सूबेदार था)

हराया एवं बाद में छोड़ दिया

सूबेदारी अलाउद्दीन को दी

2- ठगों का दमन → दिल्ली से 1000 ठगों को पकड़कर बंगाल भेज दिया

3- अमीरों का दमन → जलालुद्दीन के वध करने की योजना ↓ पता चल गया किन्तु बाद में छोड़ दिया

~~सीदी~~ सीदी मौला की हत्या → सुल्तान को मारने के आरोप में हाथी के नीचे कुचलवा दिया गया।

मंगोल आक्रमण :- अब्दुल्ला के नेतृत्व में आक्रमण

अभियान → रणथम्भौर एवं मंदसौर

अलाउद्दीन के अभियान - भिलसा अभियान (विजयी)

↓

देवगिरि अभियान - शासक - रामचन्द्र देव

↓

चंदेरी → भिलसा ~~एलिचपुर~~ - देवगिरि

(अफवाह - चाचा से नाराज)

देवगिरि से धन प्राप्त किया किन्तु सुल्तान को नहीं बताया

↓

सुल्तान को कड़ा मानिकपुर बुलाया

↓

जलालुद्दीन मानिकपुर बुलाया

↓

जलालुद्दीन मानिकपुर गया (निहत्था)

↓

जलालुद्दीन की हत्या कर दी एवं सिर को भाले पर लगाकर घुमाया।

आक्रमण किया राजा चकित

↓

संधि किया किन्तु

↓

रामचन्द्र देव के पुत्र शंकर देव ने अलाउद्दीन पर हमला किया

↓

शंकरदेव पराजित

पंजाल
दिल्ली
कड़ा
अवध
मानिकपुर
देवगिरि

जलालुद्दीन फिरोज खिल्जी – (1290 से 1296)

जलालुद्दीन 13 जून 1290 को जलालुद्दीन फिरोज खिलजी की उपाधि के साथ सिंहासन पर बैठा। उसने किलोखरी को अपनी राजधानी बनाया। सुल्तान बनते समय जलालुद्दीन की उम्र सत्तर वर्ष थी।

जलालुद्दीन ने अपने राज्यभिषेक के एक वर्ष बाद दिल्ली में प्रवेश किया। इसमें अपने पुत्रों को खानाखाना, अर्कली खॉ एंव कद्रखॉ की उपाधि प्रदान की।

अगस्त 1290 में कइामानिक पुर के सुबेदार मालिक छज्जू जिसने सुल्तान **'मुगीसुद्दीन'** की उपधि धारण कर अपने नाम के सिक्के चलवाये एंव खुतवा पढ़ा के विद्रोह को बढ़ाया।

- 1291 ई0 में रणथम्भौर का अभियान असफल रहा।
- 1292 में मन्डौर एंव झाईन के किलो को जीतने में जलालुद्दीन को सफलता मिली।
- 1292 में मंगोल आक्रमणकारी हलाकू का पौत्र अब्दुल्ला अपने लगभग डेढ़ लाख सिपाहियॉ के साथ पंजाब पर आक्रमण कर सुनाम तक पहुॅच गया परन्तु अलाउद्दीन ने मंगोलो को परास्त करने मे सफलता प्राप्त की और अन्त में दोनो के बीच सन्धि हुई।
- म्गोल वापस जाने के लिए तैयार हो गये। परन्तु चंगेज का नाती उलगू ने अपने करीब 4000 मंगोल समर्थक के साथ इस्लाम धर्म ग्रहण कर भारत में ही रहने का निर्णय किया। कालान्तर में जलालुद्दीन ने उलगू के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया और साथ ही उनके रहने के लिए दिल्ली के समीप हो मुगलपुर नाम की बस्ती बसाई गई। बाद में उन्हे ही 'नबीन मुसलमान' के नाम से जाना गया। जलालुद्दीन के शासन काल में ही उसके भतीजे अलाउद्दीन खिलजी ने 1292 में अपने चाचा की स्वीकृति के बाद भिलसा एंव देवगिरि का अभियान किया।
- इन दोनों अभियानों में अलाउद्दीन को बहुत सा धन मिला। अपने भतीजे की सफलता से खुश होकर जलालुद्दीन नें उससे मिलने काडामानिक की ओर चल पड़ा। रास्ते में गंगाा नदी के तट पर जिस समय वह अलाउद्दीन से गले मिल रहा था उसकी हत्या कर दी गई। इस प्रकार अलाउद्दीन ने अपने उदार चाचा

की हत्या कर दिल्ली के तख्त पर 22 अक्टूबर 1296 ई0 को अपना राज्याभिषेक करवाया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296 ई0 1316)

- अलाउद्दीन का बचपन का नाम अली तथा गुरशास्प था।
- जलालुद्दीन के दिल्ली तख्त पर बैठने के बाद इसे अमीर ए तजुक का पद मिला।
- मलिक छज्जू के विद्रोह को दवाने में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाने के कारण जलालुद्दीन ने इसे कड़ा–मानिकपुर की सुबेदारी सौंप दी।
- भिलसा, चंदेरी एंव देवगिरि के सफल अभियानों से प्राप्त अपार धन ने इसकी स्थिति और मजबूत कर दी।
- और इस प्रकार उत्कर्ष पर पहुॅचे अलाउद्दीन ने अपने चाचा जलालुद्दीन की हत्या कर 22 अक्टूबर 1296 को दिल्ली में स्थित बलबन के लाल ूमहल में अपना राज्याभिषेक सम्पन्न करवाया।
- राज्यभिषेक के बाद उत्पन्न कठिनाइयों का सफलता पूर्वक सामना करते हुए अलाउद्दीन ने कठोर शासन व्यवस्था के अन्तर्गत अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करना प्रारम्भ किया। अपनी प्रारम्भिक सफलताओं से प्रोत्साहित होकर अलाउद्दीन ने सिकन्दर द्वितीय (सानी) की उपाधि धारण कर इसका उल्लेख अपने सिक्कों पर करवाया। उसने विश्वविजय एंव एक नवीन धर्म को स्थापित करने के अपने विचार को अपने मित्र दिल्ली के कोतवाल अलाउक–मुल्क के समझाने पर त्याग दिया। अलाउद्दीन ने खलीफा की सत्ता को मान्यता प्रदान करते हुए 'यामिन–उलखिलाफत–नासिरी–अमीर–उल–मोयिनीन की उपाधि ग्रहण की।
- अलाउद्दीन खिलजी के राज्य में कुछ विद्रोह हुए जिनमें 1299 में गुजरात के सफल अभियान में प्राप्त धन के बटवारें को लेकर 'नवीन मुसलमानों , द्वारा किये गये विद्रोह का दमन नसरत खॉ ने किया।
- दूसरा विद्रोह अलाउद्दीन के भतीजे अकतखॉ द्वारा किया गया, उसने मंगोल मुसलमानों के सहयोग से अलाउददीन पर प्राणघातक हमला किया जिसके बदले में उसे पकड़ कर मार दिया गया।

- तीसरा विद्रोह अलाउद्दीन की बहन के लड़के मालिक उमर एंव मंगू खॉ ने किया, पर दोनो को हराकर हत्या कर दी गई।
- चौथा विद्रोह दिल्ली के हाजी मौला द्वारा किया गया जिसका दमन सरदार हमीदुद्दीन ने किया और इस प्रकार इन सभी विद्रोह को सफलता पूर्वक दबा दिया गया।
- अलाउद्दीन ने तुर्क अमीरों द्वारा किये गये विद्रोह के कारणों का अध्ययन कर उन कारणों को समाप्त करने के लिए चार अध्यादेश जारी किये।
- प्रथम, अध्यादेश के अन्तर्गत अलाउद्दीन ने दान, उपहार एंव पेंशन के रूप में अमीरों को दी गयी भूमि को जब्त कर उस पर अधिकाधिक कर लगा दिया इसमें उनके पास धनाभाव हो गया।
- द्वितीय अध्यादेश के अन्तर्गत अलाउद्दीन ने गुप्तचार विभाग को संगठित कर 'बरीद' **गुप्तचर अधिकारी** एंव मुनहिस **गुप्तचर** की नियुक्ति की।
- तृतीय अध्यादेश के अन्तर्गत अलाउद्दीन ने मद्य–निषेध, भांग खाने एंव जुआ खेलने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था।
- चौथे, अध्यादेश के अन्तर्गत अलाउद्दीन ने अमीरों के आपस में मेल–जोल, सार्वजनिक समारोहों एंव वैवाहिक सम्बंधों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। सुल्तान द्वारा लाये गये ये चार अध्यादेश पूर्णतः सफल रहे।

साम्राज्य विस्तार–

अलाउद्दीन साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का था। इसने उत्तर भारत के राज्यों को जीत कर उस पर प्रत्यक्ष शासन किया। दक्षिण भारत के राज्यों को अलाउद्दीन ने अपने अधीन कर उनसे वार्षिक कर वसूला।

गुजराज विजय –

(1298)बघेल राजाकर्ण (राज करन)

अलाउद्दीन ने उलुग खॉ एंव नुसरत खॉ 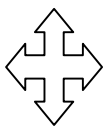 मध्य युद्ध

- राजा कर्ण पराजित अपनी पुत्री 'देवल देवी' के साथ भाग कर देवगिरि के शासक रामचन्द्र के यहॉ शरण ली।

- खिलजी की सेना ने कर्ण की सम्पत्ति एंव उसकी पत्नी कमला देवी को साथ लेकर वापस दिल्ली आया, कालान्तर में अलाउद्दीन ने कमला देवी से विवाह कर उसे अपनी सबसे प्रिय रानी बनाया, यही पर नुसरत खॉ ने हिन्दू हिजड़े 'मलिक काफूर'को एक हजार दीनार में खरीदा।

- <u>जैसलमेर पर विजय –</u>

  शासकदूदा – आरोप कि उसने सुल्तान की सेना के कुछ घोड़े चुराए।

  1299 में इसे पराजित किया।

- <u>रणथम्भौर पर विजय –</u>

  शासक– हम्मीर देव था(वीर एंव साहसी था), हम्मीर देव ने अपने यहॉ मंगोल विद्रोही नेता मु0 शाह एंव केहब को शरण दे रखी थीं
  रणथम्भौर को जीते बिना वह पूरे राजस्थान को जीतना कठिन था।
  1391 ई0 में अलाउद्दीन ने रणथम्भौर के किले को अपने कब्जें में ले लिया।
  और हम्मीर देव वीरगति को प्राप्त हुआ।
  'तरीख–ए–अलाई' एंव 'हम्मीर महाकाव्य' में हम्मीर देव एंव उसके परिवार के लोगों को जौहर द्वारा मृत्यु प्राप्त होने का वर्णन है।

<u>चित्तौड़ पर आक्रमण एंव मेवाड विजय (1303) –</u>

चित्तौड़– राजधानी – मेवाड– शासक– राणारतन सिंह था।
किला – सामारिक दृष्टि से बहुत ही सुरक्षित स्थान पर बना था।

- **अलाउद्दीन की निगाह इस किले पर थी,**
- **28 जनवरी 1305 पर सुल्तान ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया।**
- **7 महीने के संघर्ष के बाद 26 अगस्त 1303 में चित्तौड़ के किले पर अधिकार**
- **राणा रतन सिंह युद्ध में शहीद हुआ।**
  राणा रतन सिंह पत्नी (रानी पद्मिनी) ने अन्य स्त्रियों के साथ जौहर कर लिया।
  करीब 30,000 राजपूत वीरों का कत्ल करवा दिया (**अलाउद्दीन ने**)

चित्तौड़ का नाम अपने पुत्र खिज्रखां के नाम पर खिज्राबाद रखा और उसे खिज्रखां को सौप कर दिल्ली वापस आ गया।

मालवा विजय –

1305–शासक – महलक देव – इसका सेनापति 'हरनन्द' (कोका प्रधान) बहादुर योद्धा था।

मुल्तान के सुबेदार **'आईन –उल– मुल्क'** के नेतृत्व में अलाउद्दीन ने सेना भेजी। दोनो पक्षों में संघर्ष के पश्चात् महलवदेव एंव हरनन्द मारा गया। तथा विजय के पश्चात् दिल्ली सल्तनत् में मिला लिया गया।

जालौर –

शासक – कान्हणदेव ने स्वयं 1304 ई0 अधीनता स्वीकार कर ली। पुनः फिर स्वतंत्र घोषित कर लिया। 1305 ई0 में जालौर पर आक्रमण पर, कान्हणदेव की हत्या कर दी गयी।

अलाउद्दीन की दक्षिण विजय –

अलाउद्दीन की समकालीन दक्षिण भारत की तीन महत्वपूर्ण शक्तियॉ थी–

1. देवगिरी के यादव,
2. दक्षिण पूर्व के तेलंगाना के काकतीय
3. दक्षिण – पश्चिम तेलंगाना के होपसल

अलाउद्दीन द्वारा दक्षिण भारत के राज्यों को जीतने के उद्देश्य के पीछे **धन की चाह एंव विजय लालसा** थी। वह इन राज्यों को अपने अधीन कर वार्षिक कर वसूल करना चाहता था। दक्षिण भारत की विजय का मुख्य श्रेय 'मलिक काफूर' को ही जाता है।

देवगिरि (1307–08) –

अलाउद्दीन द्वारा 1296 में देवगिरि के विरूद्ध किये गये अभियान की सफलता पर वहॉ के शासक रामचन्द्र देव ने प्रति वर्ष कर देने का वापदा किया था पर रामचन्द्रदेव के पुत्र शंकर देव (सिंहन देव) के हस्तक्षेप से वार्षिक

कर का भुगतान रोक दिया। अतः नाइब मलिक काफूर के नेतृत्व में एक सेना को देवगिरि पर धावा बोलने के लिए भेजा गया रास्तें में राजा कर्ण को युद्ध में परास्त कर काफूर ने उसकी पुत्री देवल देवी, जो कमला देवी एंव कर्ण की पुत्री थी, को दिल्ली भेज दिया जहॉ पर उसका विवाह खिज्र खॉ से कर दिया गया। रास्ते भर लूट पाट करता हुआ काफूर देवगिरि पहॅुचा और पहॅुचतें ही उसने देवगिरि पहॅुचा और पहॅुचते ही उसने देवगिरि पर आक्रमण कर दिया। भयानक लूट–पाट के बाद रामचन्द्र देव ने आत्मसमर्पण कर दिया। काफूर ने अपार सम्पत्ति, ढेर सारे हाथियों एंव राजा रामचन्द्र देव के साथ वापस दिल्ली आया। रामचन्द्र के सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत होने पर सुल्तान ने उसके साथ उदारता का व्यवहार करते हुए 'राय रायान' की उपाधि प्रदान की। उसे सुल्तान ने गुजरात नवसारी जागीर एंव एक लाख स्वर्ण टंका देकर वापस भेज दिया। कालान्तर में राजा रामचन्द्र देव अलाउद्दीन का मित्र बन गया।

तेलंगाना –

यहॉ का शासक 'प्रताप रूद्र देव' था जिसकी राजधानी वारंगल थी। नवम्बर 1309 ई0 में काफूर तेलंगान के लिए खाना हुआ। रास्ते में रामचन्द्र देव ने काफूर की सहायता की 1310 में काफूर अपनी सेना के साथ वारंगल पहॅुचा। प्रतापरूद्र देव ने अपनी एक सोने की मूर्ति बनवाकर गले में एक सोने की जंजीर डालकर आत्मसर्मपण स्वरूप काफूर के पास भेजा , साथ ही 100 हाथी, 700 घोड़े, अपार धन राशि एंव वार्षिक कर देने के वायदे के साथ अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार कर ली। सम्भवतः इसी समय संसार प्रसिद्ध 'कोहनूर' हीरा को प्रताप रूद्र देव ने काफूर को दिया। काफूर ने इसे सुल्तान अलाउद्दीन को सौंप दिया।

होपसल –

यहॉ का शासक वीर बल्लाल तृतीय था। इसकी राजधानी द्वारा समुद्र थी। 1310 में मालिक काफूर ने होपसल के लिए प्रस्थान किया 1311 ई0 में साधारण युद्ध के पश्चात् बल्लाल देव ने आत्मसमर्पण कर अलाउद्दीन की अधीनता ग्रहण करली इसने माबर के

अभियान में काफूर की सहायता भी की। सुल्तान अलाउद्दीन ने बल्लालदेव को 'खिलअत' एक मुकुट' 'छत्र' एंव दस लाख टंके की थैली भेंट किया।

पाण्ड्य – इसे 'माबर' (मालाबार) के नाम से भी जाना जाता था। यहॉ के शासक सुन्दर पाण्डय थे। दोनों मे हुए सन्ता संघर्ष में सुन्दर पाण्ड्य पराजित हुआ। सुन्दर पाण्ड्य द्वारा सहायता मांगने पर काफूर ने 1311 में पाण्डयों के महत्वपूर्ण केन्द्र 'वीरभूल' पर आक्रमण कर दिया पर वीर पाण्ड्य हाथ नहीं आया। काफूर ने बरमत पती में स्थित '**लिंग महादेव**' के सोने के मंदिर में खुब लूट–पाट की। इसके अतिरिक्त ढेर सारे मंदिर इसके द्वारा लूटे एंव तोड़े गये। 1311 मैं काफूर विपुल धन सम्पत्ति के साथ दिल्ली पहुॅचा परन्तु उसे वीर पाण्डय को पकड़ने मै सफलता नहीं प्राप्त हुई। सम्भवत् धन की दृष्टिकोण से यह काफूर का सर्वाधिक सफल अभियान था।

देवगिरि का द्वितीय अभियान (1312) :

देवगिरि के शासक रामचन्द्र देव की मृत्यु के बाद उसके पुत्र 'शंकर देव' **सिंहन देव** ने दिल्ली से सम्बन्ध तोड़ लिया। अतः 1313 में काफूर को पुनः देवगिरि भेजा गया। युद्ध में शंकर देव मारा गया । देवगिरि का अधिकांश भाग दिल्ली सल्तनत मे मिला लिया गया। 1315 में काफूर को वापस दिल्ली बुला लिया गया। इस तरह अलाउद्दीन का साम्राज्य पश्चिमोत्तर भाग मैं सिन्धु नदी से लेकर दक्षिण में मदुरा तक, पूर्व में वाराणसी एंव अवध से लेकर पश्चिम में गुजरात तक विस्तृत था।

बाजार नियंत्रण नीति/आर्थिक नीति –

कारण – अलाउद्दीन को अपने साम्राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा की पूर्ति एंव निरन्तर हो रहे मंगोल आक्रमणों के कारण एक विशाल सेना की आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त उसके पास लगभग 50,000 दास थे जिन पर अत्यधिक खर्च होता था। इन तमाम खर्चो को दृष्टि में रखते हुए अलाउद्दीन ने एक नई आर्थिक नीति का निर्माण किया।

बाजार नियंत्रण नीति –

अलाउद्दीन एक अधिनियम के द्वारा दैनिक उपयोग की वस्तुओं का मूल्य निश्चित कर दिया।

कुछ गेहूँ – 7.5 जीतल, चावल – 5 जीतल, जौ0 – 04 जीतल, उड.द–05 जीतल घी – 2.5, 1 जीतल, मूल्यों की स्थिरता अलाउद्दीन की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

इसने खाद्यानों की बिक्री के लिए 'शहना–ए– मंडी' नामक बाजार की स्थापना की। प्रकृतिक विपदा से बचने के लिए अलाउद्दीन ने '**शासकीय अन्न भण्डारों** ' की व्यवस्था की थी। अपनी '**राशन व्यवस्था' के** अन्तर्गत अनाज को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराने के लिए सुल्तान ने 'दोआव' के क्षेत्र से लगान अनाज के रूप में वसूल किया पर पूर्वी राजस्थान के हाईन क्षेत्र से आधी मालगुजारी अनाज में और आधी नगद में वसूली जाती थी। अकाल या बाढ़ के समय प्रत्येक घर को प्रतिदिन आधा मन अनाज देता था। राशनिंग व्यवस्था अलाउद्दीन की नवीन सोच थी। मलिक–कबूल को अलाउद्दीन ने खाद्यान्न या अन्न बाजार का शहना–ए–मंडी नियुक्ति किया था।

'सराय–ए–अदल' ऐसा बाजार होता था जहॉ पर वस्त्र शक्कर जड़ी बूटी, मेवा, दीपक, जलाने का तेल एंव अन्यनिर्मित वस्तुएं बिकने के लिए आती थी। सराय–ए–अदल निर्माण बदायूँ द्वार के समीप एक बड़े मैदान में किया गया था। इस बाजार में एक टंके से लेकर 10,000 टंके मूल्य की वस्तुएँ बिकने के लिए आती थी। अलाउद्दीन ने कपड़े का व्यापार करने वाले व्यापारी को खाद्यान्न व्यापारियों की तुलना में अधिक से अधिक प्रोत्साहन दिया।

दिल्ली में आकर व्यापार करने वाले प्रत्येक व्यापारी को **'दीवान–ए–रियासत'** में अपनों नाम लिखवाना पड़ता था। अलाउद्दीन के बाजार नियंत्रण की पूरी व्यवस्था का संचालन **'दीवान–ए–रियासत'** नाम का अधिकारी करता था। इसके नीचे काम करने वाले कर्मचारी वस्तुओं के क्रय–विक्रय एंव व्यवस्था का निरीक्षण करते थे। प्रत्येक बाजार में बाजार का निरीक्षण का अधीक्षक जिसे **'शहना–ए–मंडी'** कहा जाता था, बाजार का उच्च अधिकारी होता था। इसके अधीन **'बरीद'** होते थे जो बाजार के अन्दर घूम कर बाजार का निरीक्षण करते थे। बरीद के नीचे **'मुनहियान'** व गुप्तचर कार्य करते थे।

अधिकारियॉ का क्रम इस प्रकार था।

01.दीवान–ए–रियासत, 02. शहना–ए–मंडी, 03. बरीद, 04. मुनहियान

अलाउद्दीन ने मलिक याकूब को 'दीवान–ए–रियासत' नियुक्ति किया था, अलाउद्दीन ने 'परवाना–नबीस' नामक अधिकारी की नियुक्ति की। इसका कार्य होता था तस्बीहस तबरेज,

कंज माबरी, सुनहरी जरी, देवगिरी रेराय, खुज्जे दिल्ली एंव कमरवाद जैसी वस्तुओं को बेचने के लिए परवाना–नवीस (परमिट) जारी करना।

घोड़ो, दासों एंव मवेशियों के बाजार में मुख्यतः चार नियम लागू थे–

01. किस्म में अनुसार मूल्य का निर्धारण।
02. व्यापारियॉ एंव पूॅजीपतियों का बहिष्कार।
03. दलाली करने वाले लोगों पर कठोर अंकुश।
04. सुल्तान द्वार बार–बार जॉच पड़ताल। मूल्य नियंत्रण को सफल बनाने में 'मुहतसिव' (सेसंर) एंव 'नाजिर' (नाप–तौल–अधिकारी) की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

<u>राजस्व एंव कर व्यवस्था –</u>

राजस्व सुधारों के अन्तर्गत अलाउद्दीन ने सर्वप्रथम मिल्क,इनाम एंव वक्फ के अन्तर्गत दी गई भूमि को वापस लेकर उसे खालसा भूमि में बदल दिया, साथ ही मुकद्दमों, ,खूतों एंव बलाहारों के विशेष अधिकार को वापस ले लिया । अलाउद्दीन ने पैदावार का पचास प्रतिशत भूमिकर (खराज) के रूप में लेना निश्चित किया। अलाउद्दीन प्रथम सुल्तान था जिसने भूमि की पैमाइश कराकर (यसाहत) एंव भूमि की वास्तविक आय पर लगान लेना निश्चित किया। अलाउद्दीन ने भूमि के एक 'विसवा' को एक इकाई माना। सुल्तान लगान को अन्न को वसूलने को महत्व देता था। अलाउद्दीन द्वारा लगाये गये दो नवीनकर थे – चराई कर दुधारू पशुओं पर लगाया जाता था और परीकर घरों एंव झोपड़ी पर लगाया जाता था। 'करी' या 'करही' नाम के कर का भी जिक्र मिलता है। 'जजिया' कर गैर मुस्लिमों से लिया जाता था 'खुम्स' कर 4/5 भाग राज्य के हिस्से में एक पांचवा हिस्सा सैनिकों को मिलता था। 'जकात' केवल मुस्लिमों से लिया जाता था। 'खुम्स कर 4/5 भाग राज्य के हिस्से में एंव पांचवा हिस्सा सैनिकों को मिलता था। 'जकात' केवल मुसलमानों से लिया जाने वाला एक धार्मिक कर था जो सम्पत्ति का 40वॉ हिस्सा था। अलाउद्दीन अपना अन्तिम समय अत्यन्त कठिनाई में व्यतीत करता हुआ 05 जनवरी 1316 को मृत्यु प्राप्त हो गया।